विचार बिन्दु

दो अर्थों वाले शब्द बोलकर, किसी विशेष शब्द पर जोर देकर, या आँख के इशारे से भी झूठ बोला जाता है। इस प्रकार का झूठ स्पष्ट शब्दों में बोले गए झूठ से कहीं बुरा है। –रस्किन

समृद्ध परम्परा और कला की अभिव्यक्ति का मंच है युवा महोत्सव

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय भारत सरकार ने युवा प्रतिभाओं को कलात्मक एवं सांस्कृतिक समृद्धता के क्षेत्र में आगे बढाने की दिशा में युवा उत्सव की शुरुआत की है। युवा उत्सव आपसी सामंजस्य, सौहार्द्र और सहयोग की भावना में वृद्धि करता है। युवा महोत्सव हमारे प्रतिभाशाली युवाओं को राष्ट्र निर्माण की ओर प्रेरित करने के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन प्रदान करने हेतु आयोजित किया जाता है। यह युवाओं के बीच राष्ट्रीय एकता, भाईचारे, सांप्रदायिक सद्भाव की भावना और साहस की अवधारणा को प्रचारित करने के उद्देश्य से आयोजित किया जाता है। यह देश के सभी हिस्सों से विविध संस्कृतियों को एक आम मंच पर लाता है एवं प्रतिभागियों को एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना से जोडता है। युवा उत्सव का आयोजन जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कला प्रदर्शन के विभिन्न क्षेत्र जैसे सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुति, मोबाइल से फोटोग्राफी, भाषण के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति, चित्रकला और काव्य लेखन में युवा प्रतिभाओं की पहचान कर उन्हें प्रस्तुति के मंच के साथ-साथ प्रशिक्षण हेतु संगठित करने का प्रयास है । आजादी के 75 वर्षों के उपलक्ष में हो रहे इन कार्यक्रमों का लक्ष्य युवा शक्ति को देश की प्रगति और उपलब्धियां से भी अवगत कराना है । इन कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न विभागों द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाती है ताकि युवा जन जागरण की भूमिका में भी तमाम जानकारियां को युवा उत्सव के माध्यम से प्राप्त कर आम जन तक पहुंच सके ।

प्रधान मंत्री के पंच प्रण पर आधारित युवा उत्सव में जिला स्तर पर विजेता प्रतिभागी राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर क्या आयोजन में भाग लेते हैं जिसमें नए अनुभव के साथ-साथ संस्कृति और विचारों का आदान-प्रदान भी युवा करते हैं । युवा उत्सव कार्यक्रम कला के क्षेत्र विशेष में रुचि रखने वाले युवाओं को एक दूसरे से मिलकर नए तौर तरीकों और एक दूसरे के साथ संवाद और संपर्क स्थापित करने में भी एक नया मंच प्रदान करता है। नेहरू युवक संगठन के क्षेत्रीय निदेशक डॉ भुवनेश जैन के अनुसार देशभर में युवा उत्सवों की आयोजन की जिम्मेदारी नेहरू युवा केंद्र संगठन को दी गई है जिसके अंतर्गत शैक्षिणक संस्थाओं व प्रशासन से समन्वयन स्थापित आयोजन को एक बेहतरीन कला मंच के रूप में युवाओं के लिए प्रस्तुत करने का प्रयास है । नेहरू युवा केंद्र संगठन ने संपूर्ण देश में इन युवा उत्सवों को बेहतरीन युवा सहभागिता के साथ एक रोमांचित रंगमंच के रूप में साकार किया है। देश भर में जिला स्तर पर कुल 566 युवा उत्सव आयोजित हो चुके हैं जिसमें 3718 प्रदर्शनी स्टॉल्स विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई है और कल 127645 प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रतिस्पर्धा में भाग लिया है । इस महोत्सव में कुल 487606 नागरिक और युवा प्रत्यक्ष रूप से साक्षी बने हैं ।

युवा उत्सव न केवल प्रतिभा दिखाने का एक मंच है बल्कि इसके माध्यम से लोकतांत्रिक मूल्यों को भी ताकत देने का प्रयास किया जा रहा है और युवाओं के साथ जन प्रतिनिधियो से संवाद के साथ-साथ 2047 के भारत के विजन से भी युवाओं को अवगत कराया जा रहा है । इन कार्यक्रमों के माध्यम से अब तक 30 केंद्रीय मंत्री 248 सांसद और 165 विधायकों ने शिरकत देकर युवाओं से संवाद किया है।

युवा उत्सव न केवल प्रतिभा दिखाने का एक मंच है बल्कि इसके माध्यम से लोकतांत्रिक मूल्यों को भी ताकत देने का प्रयास किया जा रहा है और युवाओं के साथ जन प्रतिनिधियो से संवाद के साथ-साथ 2047 के भारत के विजन से भी युवाओं को अवगत कराया जा रहा है । इन कार्यक्रमों के माध्यम से अब तक 30 केंद्रीय मंत्री 248 सांसद और 165 विधायकों ने शिरकत देकर युवाओं से संवाद किया है।

राजस्थान के 33 जिलों में 33 युवा उत्सव का आयोजन हो चुका है जिसमें 5995 प्रतिभागियों ने भाग लिया और 24000 युवा अप्रत्यक्ष रूप से कार्यक्रम के साक्षी बने । 21 सांसदों ने युवा उत्सव में लोगों को संबोधित किया । विभिन्न विभागों ने 317 प्रदर्शनी इन कार्यक्रमों के माध्यम से लगाई तथा अपनी योजनाओं की जानकारी को आम जन तक पहुंचाया । देश के 29 राज्यों में भी राज्य स्तरीय युवा उत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसकी शुरुआत राजस्थान से हो चुकी है । दो दिवसीय राज्य स्तरीय युवा महोत्सव का शुभारंभ निम्स यूनिवर्सिटी जयपुर में केंद्रीय सूचना व प्रसारण एवं युवा कार्यक्रम व खेल मंत्री माननीय श्री अनुराग सिंह ठाकुर के करकमलों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में क्रमशः पांच प्रतियोगिता सांस्कृतिक कार्यक्रम, भाषण प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, कविता प्रतियोगिता, फोटोग्राफी प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिताओ की थीम प्रधानंत्री नरेंद्र मोदी के अमृत काल के पंच प्रण पर आधारित भारत 2047 का विजन थी। प्रतियोगिताओं में विजेता रहे युवाओ को नकद पुरस्कार, ट्राफी व सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में युवाओं के बीच विचारों का आदान प्रदान कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

–अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

पंडित अनिल शर्मा

राशिफल गुरूवार 31 अगस्त, 2023

द्वि. सावन मास (शुद्ध), शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, शतभिषा नक्षत्र सांय 5:45 तक, सुकर्मा योग सांय 5:15 तक, बव करण प्रातः 7:06 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सत्य व्रत, श्रावणी पूर्णिमा है। आज प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है। आज रक्षा बन्धन (औपचारिकता निभाने हेतु) है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:44 तक, चर 10:53 से 12:27 तक, लाभ-अमृत 12:27 से 3:36 तक, शुभ 5:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:45

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

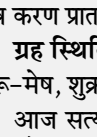

सिंह

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

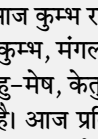

धनु

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। स्वास्थ्य ठीक बना रहेगा।

कर्क

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का ध्यान रखें।

कथौड़ी जनजाति में मावलिया एवं होली नृत्य की परम्परा

पन्नालाल मेघवाल

महाराष्ट्र प्रांत के खानदेश जिले की कतकरी जनजाति कत्था बनाने में निपुण थी। इन्हें लगभग 150 वर्ष पूर्व कत्था बनाने के लिए एक बोहरा ठेकेदार राजस्थान लेकर आया। यहां अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं में खासतौर पर फुलवारी की नाल के जंगलों के इर्द-गिर्द बसाया। इन्होंने कत्था बनाने का कार्य किया। महाराष्ट्र के कतकरी जनजाति के इन लोगों द्वारा कत्था बनाने के कारण ही राजस्थान में इनका नाम कथौडी पडा।

कत्था खैर वृक्ष से बनता है। इन्होंने यहां 50 वर्ष तक कत्था निर्माण का कार्य किया। खैर वृक्ष समाप्त होने के बाद कत्था बनाने का कार्य बन्द हो गया। लेकिन ये परिवार यहीं बस गये। इन्होंने लकड़ी, कोयला, गोंद, मुसली, महुआ, डोलमा, रतनजोत, तेंदूपत्ता आदि लघु वन उपज को अपनी आजीविका का आधार बनाया।

कथौड़ी जनजाति के लोग अत्यधिक साधारण जीवन जीते हैं। यह जनजाति स्वाभिमानी, ईमानदार एवं मेहनतकश है। ये लोग गरीब अवश्य हैं, लेकिन दान या भीख में दी गई कोई वस्तु स्वीकार नहीं करते हैं। इनका रहन-सहन अत्यधिक सादा है, लेकिन नृत्य एवं संगीत के पूरे शौकीन होते हैं। कथौड़ी जनजातियों द्वारा नवरात्रि एवं दीपावली त्यौहार पर मावलिया नृत्य किया जाता है जबकि होली त्यौहार पर होली नृत्य किया जाता है।

कथौड़ी जनजाति का प्रमुख मावलिया नृत्य है। यह नृत्य केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। कथौड़ी नवरात्रि त्यौहार पूरे भक्ति-भाव एवं हर्षोल्लास से मनाते हैं। कथौड़ी देवी-भक्ति के प्रबल उपासक हैं। नवरात्रि में यह समुदाय अपनी आराध्यदेवी-भारीमाता एवं कंसारीमाता, आराध्यदेव- डूंगरदेव एवं गामदेव की पूजा अर्चना करके विधिवत रूप से नवरात्रि स्थापना करते हैं। इन दिनों में ये देवी देवताओं की पूजा अर्चना के बाद मावलिया नृत्य करने आसपास की बस्तियों में निकल जाते हैं।

मावलिया नृत्य केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। 10 -12 पुरुष ढोलक, टापरा एवं बांसुरी की लय पर देवी-देवताओं के गीत गाते हुए गोल गोल नृत्य करते हैं। लोक गीतों के बोल के साथ ही वाद्य-यंत्रों की लय पर समूह नृत्य करते हैं। नृत्य के दौरान वाद्य-यंत्रों की लय पर कभी आगे तो कभी पीछे हटते हुए आकर्षक नृत्य करते हैं। इन्हें नृत्य के दौरान जो सामग्री भेंट स्वरूप मिलती है, उसे आपस में प्रसाद के रूप में वितरित करते हैं। नवरात्रि के अंतिम दिन देवी- देवताओं की पूजा की जाती है तथा हर्षोल्लास के साथ मावलिया नृत्य किया जाता है। इस दिन सामूहिक प्रसादी करके नवरात्रि वलावण (समापन) कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इनके द्वारा दीपावली पर्व पर भी यह नृत्य किया जाता है।

कथौड़ी जनजातियों का दूसरा प्रमुख होली नृत्य है। इनके द्वारा होली त्यौहार पर होली नृत्य हर्षोल्लास के साथ किया जाता है। होली नृत्य को गैर नृत्य भी कहा जाता है। यह नृत्य महिलाओं द्वारा किया जाता है। 10 -12 स्त्रियां समूह बनाकर गोल-गोल घूमते हुए नृत्य करती हैं। इसमें पुरुष ढोलक, पावरी, घोरिया एवं बांसली (बांसुरी) पर संगत करते हैं। स्त्रियां समूह बनाकर एक-दूसरे का हाथ पकड़कर गीत गाते हुए गोले में नृत्य करती हैं। नृत्य के दौरान ये एक दूसरे के कंधे पर चढ़कर पिरामिड बनाती हैं। ये स्त्रियां तीन से चार स्टेप का पिरामिड बनाती हैं। होली त्यौहार पर पूरे 10 दिन तक गैर नृत्य करके भरपूर मनोरंजन करते हैं। इन दिनों में यह कोई कामकाज नहीं करते हैं। यह इनका दूसरा प्रमुख होली नृत्य कहलाता है।

– पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं
स्वतंत्र पत्रकार

शहीद की मूर्ति पर राखी बांधकर रिश्ता निभा रही हैं बहनें

डीडवाना, (नि.सं.)। भाई-बहन के प्यार के प्रतीक रक्षा बंधन का बहनें साल भर इंतजार करती हैं और वो दिन आने पर भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं। भाई बदले में बहन को उपहार देता है और रक्षा का वादा करता है, लेकिन डीडवाना के छापरी गांव की दो बहनों का एक भाई देश की रक्षा का वादा निभाते निभाते शहीद हो गया। आज इन बहनों का भाई इस दुनिया में मौजूद नहीं है, लेकिन यह बहनें आज भी अपने भाई को याद करती हैं और शहीद भाई की मूर्ति पर ही राखी बांधकर भाई-बहन के रिश्ते की परंपरा निभाती हैं।

रक्षाबंधन भाई-बहन के बीच प्यार और भाई का बहन की रक्षा करने का संकल्प करने का दिन है। इस मौके पर बहनों द्वारा अपने भाइयों के कलाइयों पर राखी बांधने की खबरें तो आपने खूब सुनी होगी, मगर आज उन बहनों के मन की पीड़ा बता रहे हैं जिनके भाई देश की सुरक्षा करते हुए बलिदान हो गए। इन तस्वीरों में आप

डीडवाना के छापरी में बहनें हर साल शहीद छोटूराम की मूर्ति पर राखियां बांधती है।

जिस मूर्ति को देख रहे हैं, वो डीडवाना जिले के छापरी गांव के शहीद छोटूराम की है। छोटूराम 4 जून 2006 को जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों से मुठभेड़ में शहीद हो गए थे। आज छोटूराम इस दुनिया में नहीं है, मगर उनकी बहनें विमला और गीता पिछले 17 सालों से अपने भाई की मूर्ति की कलाई पर राखी बांधने शहीद स्मारक आती है, और राखी बांधकर रक्षाबंधन की इस भारतीय परंपरा को निभाती है। हालांकि शहीद छोटूराम की प्रतिमा पर उनकी बहिन ने ज्यो ही राखी बांधी तो उसकी आंखे आंसूओं से भर आई।भाई-बहन के अटूट प्रेम के बारे में हम किस्से कहानियों में सुनते आए हैं, मगर शहीद छोटूराम की इन बहनों ने अपने भाई के देश के लिए शहीद हो जाने के बाद भी 17 सालों से इस रिश्ते को बदस्तूर जारी रखा है।

- डीडवाना के छापरी में बहनें हर साल बांधती है शहीद छोटूराम की मूर्ति पर राखियां
- 17 साल से शहीद की मूर्ति पर राखियां बांधकर मनाती है रक्षाबंधन
- 2006 में आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए थे छोटूराम

शहीद की बहनों ने बताया कि भारत मां के वीर सपूत शहीद छोटूराम की बहुत याद आ रही है, क्योंकि वे राखी पर मुझे हमेशा फोन करते थे और हमारे लिए तोहफे लाते थे, लेकिन आज केवल उनकी यादें ही रह गयी है। भले ही आज उनका भाई दुनिया में नहीं है, मगर उन्होंने देश की खातिर अपनी शहादत देकर भारत माता की रक्षा की है। इसलिए हमें अपने भाई की शहादत पर गर्व है। उन्होंने कहा कि हमारा भाई मरा नही है, आज भी वो उनके दिल मे, हमारे दिल में, इस देश के दिलों में जिंदा है, क्योंकि शहीद कभी मरते नहीं अमर हो जाते हैं।

जैन धर्मावलंबियों द्वारा एक-दूसरे का आदर करने, सहायता करने, सुरक्षा करने की भावना से मनाया जाता है रक्षाबंधन का पर्व

भागचंद जैन मित्रपुरा

जैन धर्म के 19 वें तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ स्वामी के समय में हस्तिनापुर में महापद्म नामक चक्रवर्ती का राज्य था। उनकी रानी लक्ष्मी मति और दो पुत्र विष्णुकुमार और पद्म थे। जब राजा महापद्म को सांसारिक भोगों के प्रति वैराग्य हुआ साथ ही दीक्षा लेने का विचार किया और राजा ने अपना राज्य अपने बड़े पुत्र को देने का निश्चय किया, तो विष्णु कुमार ने राज्य लेने से मना कर दिया। विष्णु कुमार ने अपने पिता से पूछा कि आप यह चक्रवर्ती का पद, छह खंड का साम्राज्य, पूरा भरत क्षेत्र क्यों छोड़ रहे हो? तब राजा महापद्म ने कहा कि अब मैं जान गया हूँ कि इस संसार में सार नहीं है। तत्वज्ञानी विष्णु कुमार ने पूंछा कि जब इस संसार में कोई सार नहीं है और आप स्वयं भी जब इस संसार को छोड़ रहे है, तो क्या आपको इस तरह की असार वस्तु को अपने बेटे को भेंट करना चाहिए ? जो सच्चे पिता होते हैं, वो अपने बेटे को अच्छी चीज़ ही देते हैं। पिता से कहा कि इस असार संसार से मुझे भी अब वैराग्य हो गया है और स्वयं भी दीक्षा लेने की अनुमति मांगी। तब राजा महापद्म ने अपने छोटे पुत्र पद्म को पूरा राज्य दे दिया। फिर राजा महापद्म तथा उनके सुपुत्र विष्णु कुमार ने जाकर सागरचन्द्र आचार्य से दीक्षा ले ली। शीघ्र ही महापद्म मुनिराज ने घातिया कर्मो को नष्ट कर केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया और फिर मोक्ष में चले गये।

लेकिन मुनि विष्णु कुमारजी घनघोर तपस्या में लीन रहे। तपस्या करते-करते उन्हें बहुत सी ऋद्धिया प्राप्त हो गयी। एक दूसरी घटना क्रम में अवन्ती देश की उज्जयिनी नगरी में राजा श्री वर्मा राज्य करते थे। उसके यहाँ चार मंत्री थे - बलि, ब्रहस्पति, प्रह्लाद और शुक्र। एक बार परमयोगी दिगम्बर जैन मुनि अकंपनाचार्य अपने सात सौ मुनि शिष्यों के साथ ससंघ उज्जयिनी नगरी आए। तब उज्जयिनी के राजा और सारी प्रजा अष्ट द्रव्य का थाल सजा कर अत्यंत उत्साहपूर्वक मुनिराजो के दर्शन के लिए निकलती है। उसी समय मुनिश्री अकंपनाचार्य को अपने अवधिज्ञान से पता चला जाता है कि इस राज्य के सभी मंत्री दूसरे धर्म को मानने वाले हैं, इसलिए इस राज्य में किसी भी तरह का किसी से भी वार्तालाप, चर्चा या संपर्क मुनिसंघ के हित में नहीं है। इसलिए उन्होंने सारे संघ को मौन धारण करने का आदेश दे दिया।

जब राजा और प्रजा ने वहां पर जाकर वंदना करने के पश्चात मुनिराजों से निवेदन किया कि हे ज्ञानवान गुरुवर, हमें धर्म का उपदेश दीजिये, जिससे हम अपने सम्पूर्ण जीवन को सफल बना सके, लेकिन किसी भी मुनिराज ने कोई भी जवाब नहीं दिया, क्योकि सब साधु मौन थे, प्रयास करने पर भी किसी भी मुनिराजों ने अपना मौन नहीं खोला, तब इन चारों मंत्रियो ने राजा को बोला कि अरे ये मुनिराज तो निरे अंगूठे-छाप हैं इनको कुछ आता नहीं है। यही कारण इनकी जैनेश्वरी दीक्षा लेने का है इसके सिवा कोई और कारण नहीं है, आप इनसे धर्म का स्वरुप पूछ रहे हैं लेकिन ये सब मुनि जानते हैं कि इनको कुछ नहीं आता है। इसके बाद राजा के साथ वे सब नगर की और लौटने लगे। तब रास्ते में इसी संघ के एक श्रुतसागर नामक मुनिराज को आता देख, इन चारो मंत्रियों में से एक मंत्री ने कहा कि अरे देखो, कैसा जवान बैल चला आ रहा है।

जो ज्ञानी महात्मा हैं, जिनको चारो अनुयोगो का ज्ञान है, उन आत्मज्ञानी महापुरुष को कोई जीत नहीं सकता है। वाद-विवाद में उनको कोई पराजित नहीं कर सकता है। जो लोग थोडा बहुत पढ़ कर तर्क-वितर्क करने लग जाते हैं, वो अपनी ही बात से खुद ही पराजित हो जाते हैं। इस तरह स्यादवाद के धारक मुनिराज ने सबको पराजित कर दिया और वो सब मंत्री गण परास्त होकर म्लान मुख हो चले जाते हैं। इसके बाद मुनि श्रुतसागर जी आचार्य अकम्पनाचार्य जी के पास जाते है तथा उनको सब मंत्रियों से हुए समस्त वार्तालाप को बता देते हैं कि रास्ते ये घटना हुई तो मुझे थोड़ा सा शास्त्रार्थ करना पड़ा और वो परास्त हो गये तब वे आचार्य बोलते हैं कि तुमने मुनि संघ के ऊपर संकट ला दिया है और पुनः उसी स्थान पर चले जाने व कायोत्सर्ग मुद्रा में मौन होकर खड़े हो जाने कहा। अब इस संकट से बचने का एक मात्र उपाय यही हो सकता है। इस तरह गुरु की आज्ञा की अनजाने में जो भूल हो गयी है, उसका भी प्रायश्चित हो जायेगा।

तब वे मुनि श्रुतसागर आचार्यश्री को नमस्कार कर चले गए और उसी स्थान पर जाकर कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े हो गये। अंत में निर्णय यह निकलता है कि जिस मुनि के कारण हमको इतनी बदनामी हुई है, उसी मुनि की हत्या करनी चाहिए अतः अब हम रातो-रात उस मुनि को मार डालेंगे। फिर चारो मंत्रीगण रात को उसी मार्ग से निकलते हैं रास्ते में चांदनी रात में श्रुतसागर मुनिराज को कायोत्सर्ग मुद्रा में देख कर पहचान लेते हैं और सोचते हैं कि चलो अच्छा हुआ, हमारा दुश्मन तो यही खड़ा है चारो मंत्रियों ने तलवार उठा ली और जैसे ही वो मारने को होते हैं, तब उस जगह का वन देवता उनके हाथो को कीलित कर देता है, जिससे उनके शरीर जकड़ जाते हैं और वे रात भर इसी मुद्रा में खड़े रह जाते हैं। सुबह जब जनता मुनिराजो को वंदना के लिए निकलती है, तब रास्ते में इन दुष्टों को मुनिराज को मारने के लिए तलवार उठाये कीलित मुद्रा में देख कर अत्यंत क्रोधित होकर राजा को बताती है तब राजा बहुत कुपित होता है कि इन दुष्टों ने इतना नीचा कार्य करने की कोशिश की फिर राजा उन चारो मंत्रियो को अपमान पूर्वक देश निकाले का दंड देकर अवन्ती देश से निष्काषित कर देते हैं।

इसी बीच हस्तिनापुर के राजा पद्म पर सिंहबल नामक राजा चढाई करता है, तब ये चारो मंत्री अपने छल-बल से सिंहबल राजा को बंदी बनाकर राजा पद्म के सामने ले आते हैं तब राजा पद्म बहुत प्रसन्न होता है, और बोलता है कि तुम सभी को मैं मंत्री बनाता हूँ और साथ में तुमको अगर कोई वरदान मांगना हो, तो मांग लो। बलि मंत्री बोला, जब वक़्त होगा तब मागेंगे। अब जैसे ही इन मंत्रियों को इस बात का पता चलता है, वे सभी राजा पद्म के पास जाते हैं और राजा से वरदान में सात दिन का राज्य मांगते हैं। अब ये चारो मंत्री राजा बनते ही मुनिसंघ के चारो ओर एक बाड़ी लगा देते है फिर उसमे अग्नि जलाकर यज्ञ प्रारंभ करते हैं और लकड़ी आदि जलाने लगते हैं तब चारो ओर बहुत सारा धुवाँ फ़ैल जाता है। इधर इस यज्ञ का धुवाँ दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था और मुनिराजों का दर्द भी बढ़ता जा रहा था। छठी रात को इस अत्यंत पीड़ादायक घटना से श्रवण नक्षत्र भी कम्पायमान हो उठता है।

इस स्थल से बहुत दूर विराजमान अवधिज्ञान के धारी आचार्य सागरचन्द्रजी ने इस कम्पित नक्षत्र को देखकर जाना कि ये बहुत अमंगलकारी अशुभ संकेत है और फिर वे मुनिराज अपने अवधिज्ञान से जान गए कि अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिराजों पर प्राण संकट आया हुआ है तब एकदम से उनके मुख से आह... ! ये शब्द निकलते हैं।

तब उन्होंने संघ में एक क्षुल्लकजी जिनके पास आकाशगामिनी विद्या थी, उनको आधी रात को ही बुलाया और बोला कि तुम तत्काल जाकर धरणीभूषण पर्वत पर विराजमान विष्णु कुमार मुनि को जाकर बता देना कि वे विक्रिया ऋद्धिधारी मुनि हैं और इन 700 मुनिराजों पर आये इस भीषण संकट का निवारण सिर्फ वे ही कर सकते हैं। तब वे क्षुल्लक जी आकाश मार्ग से चले जाते है और विष्णु कुमार मुनि को सब बताते हैं राजा पद्म बताता है कि अगर मैं राजा होता तो कभी ये नहीं होने देता लेकिन अभी मेरा राज्य सात दिनों के लिए उन मंत्रियो के पास है। अतः मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। कृपया आप कुछ उपाय करे। तब विष्णुकुमार मुनि विक्रिया ऋद्धि से अपना रूप बदल कर वामन का रूप धारण करते हैं। फिर वे वहां जाकर बड़ी सुन्दर आवाज में वीणा को लेकर वेदपाठ प्रारम्भ करते हैं तब बलि राजा बहुत अच्छे से उस वामन का स्वागत करते है और पूछते हैं कि हे विप्र आप क्या चाहते हो? आपका इतना सुन्दर वेदपाठ सुनकर हम प्रसन्न हो गये हैं आज किमिच्छिक दान का दिन है आपको जो भी माँगना है, वो मांग लो तब वह वामन ऋषि कहते हैं कि हमें संपत्ति तो नहीं चाहिए, लेकिन तीन डग जमीन चाहिए तब राजा बलि उसे तीन डग जमीन देने का वादा करते हैं तब विष्णु कुमार मुनि बोलते है लो बलि राजा, मैं तीन डग जमीन नापता हूँ।

दो पैर में उन्होंने सुमेरु पर्वत से मानुषोत्तर पर्वत तक सम्पूर्ण मनुष्य लोक को नाप लिया, अब तीसरा पैर के लिए उनके लिए कोई स्थान बचा ही नहीं था अतः उनका पैर हवा पर लहरा रहा था तब देव लोक में हलचल मच गयी, मध्य लोक के देवता लोग भी घबरा गये, उन सबने विचार किया कि अगर अभी इन मुनिराज को शांत नहीं किया, तो उनकी नज़र मात्र से तीनो लोक कंपित हो सकते हैं और असमय में प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो सकती है तब देवता गण उनको शांत करने के लिए चार वीणा मंगवाते है, और फिर वीणा से इतना सुन्दर संगीत बजाते हुए क्षमा के गीत गाते हैं तब मुनिराज शांत होकर फिर से सामान्य रूप में दिगंबर मुद्रा में खड़े हो जाते हैं तब राजा बलि आश्चर्य में पड़ जाता है कि जैन साधु में इतनी क्षमता कि दो डग में पूरा मनुष्य लोक नाप लिया और मैं बड़ा दान वीर बना फिरता था।

सभी देवताओ ने फिर बलि आदि मंत्रियों को बाँध दिया और इन मुनिराजो के चरणों में डाल दिया तब ये सभी मंत्री समस्त 700 मुनिराजों से क्षमा मांगते हैं, तब मुनिराज उसको क्षमा कर देते हैं। साथ ही उन मुनिराजो का उपसर्ग भी देवता लोग मिटा देते हैं और वातावरण को भी सुमधुर तथा सुगंधित बना देते हैं लेकिन जो धुवां उन मुनिराजो के अन्दर चला गया था, उससे उनको बहुत परेशानी हो रही थी फिर सुबह जब पूर्णिमा का यह रक्षाबंधन का दिन उदित होता है, तब सभी 700 मुनिराजजी आहार के लिए जाते हैं, तो पूरी हस्तिनापुर नगरी के श्रावक लोग ऐसा सुमुधर आहार निर्माण करते हैं जिससे इन सभी 700 मुनिराजों की कंठ की पीड़ा ठीक हो जाए फिर इन सभी 700 मुनिराजों को खीर में घी मिलाकर उसका आहार देते हैं। इस आहार से मुनि महाराजो के गले में शांति होती है और वे सभी लोगो को उनके कल्याण का उपदेश देते हैं।

इस दिन पूरे राज्य और देश में एक अद्भुत वात्सल्य का, एक दूसरे के प्रति सम्मान और आदर का भावुक वातावरण बन गया फिर सभी लोगो ने एक दूसरे के हाथो में पतला सा सूत्र बांधा और संकल्प लिया, सौगंध खायी कि कभी भी देव-शास्त्र-गुरु पर संकट आयेगा, तो हम सब मिलकर उनका सामना करेगे। इसके बाद वे विष्णुकुमार मुनि अपने गुरु के पास जाते हैं और अपने इस रूप बदलने का प्रायश्चित लेते हैं और अंत में वे विष्णुकुमार मुनिराज भी उसी जन्म में सभी धातिया और अधातिया कर्मो का नाश कर उसी भव से मोक्ष चले जाते हैं। इस तरह ज्ञान चेतना की सर्वोच्च शक्ति को दर्शाने वाले आत्म धर्म के शास्त्रों में परमपूज्य मोक्षगामी विष्णुकुमार मुनिराज की यह अद्भुत कथा जैन शास्त्रों में रक्षाबंधन पर्व के रूप में मनायी जाती है।

– संकलन,
भागचंद जैन मित्रपुरा,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय
जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर